



जिंदगी ही नशा है।

बढ़ती हुई दुनिया के साथ हमारे जिंदगी भी कई दूर की, कल्पित की ओर बढ़ रहा है। आज के दुनिया में मनुष्य का जीवन एक नशा के तरह है। जिसका अगर हम साथ समझकर सही इस्तमाल करें तो वह हमें खुशी देता है। पर अगर दुरुपयोग किया तो वह हमारी बर्बादी का कारण बन जाता है।

भौतिक दुनिया में नशा का मतलब सिर्फ धूम्रपान, काँकन आदि होता है। पर जिंदगी की पुस्तक में नशा बढ़क़े खुबसूरत होती है। हमारी सपना की नशा, खुशीयाँ की नशा, प्यार का नशा फ़र्श कितने ही नशा हैं। जो मनुष्य की जीवन का रंगीन बना दे।

कुछ नशा हर ज़ेस एक सिक्के की दाँ माड़ होता है, उसी तरह नशा के भी दो वंश हैं, एक सही बता दूसरा गलत।



ऊँच पहाड़ी पर रहनेवाले सिपाहीयाँ का
नशा पि धारू पिन से ठंड से मुक्ति
मिलता है, और न जाने कितने रंग की
चिकित्सा भी दूक तरह की नशा ही है,
पर इस जब कोई व्यक्ति अपने भौतिक
अत्याग्रह कलिदर अपने इसका अधिक सेवन
करता है तो वह धीरे धीरे काल की ओर
बढ़ जाता है।

जिदंगी भी कुछ ऐसा ही होता है।
अगर हम हमारे भावनाओं की ओर बढ़कर
उसके लिए प्राण बन जादग तो वा हमारे
लिदर मोत से भी बुरे किस्मत ल
आदगी।

"मनुष्य दूक स्वप्नजीवी है।" दूसे
दूके महान कवि राम धारी सिंह दिनकर न
अपने कविता में कही है। यह वाक्य शत
प्रतिशत सही है। मनुष्य की सपना उसके
लिदर दूक तरह की नशा होना चाहिए
जा उसे आगे बढ़ने के लिए बढ़ावा दे।



Item Code:

948

Participant Code:

107

वा नशा होना चाहिए जा उस न मिल
ता वा चैन स न बैठ सके और अपन
सपन केलिए जी जान स महत्त करे।
पर जिस वक्त यह नशा पागलपन
की और बढ़ जात तब हम अपन आपका
शूल , फूक जानवर स भी नीचे गिर
जात है। हमारे सपना क लिए दूसरा का
कष्ट पहुँचाने केलिए भी तैयार हो जात है।
इस इन सबके बाद अगर हम सफल हो भी
गए ता तब भी हमें न खुशी होगी न
चैन क्योंकि हमारी पागलपन में हमने बहुत
कुकर्म की है।

मनुष्य का हमेशा बेफिक्र रहना पित्त
चाहिए। कहत है कि जब मनुष्य ^{धारू चिक्का} ~~बेशी~~ में
हो ता वा अपन धर्म विचार शूल अपन
मन की कर खिड़, खुश रहत है। हर फूक
व्यक्ति का बिना धारू पि ही फूरी
जिदंगी जिना चाहिए, उस अपन
भयदा, समाज लोक समाज आदि की



दायरे स बढे, वा करना चाहिए जा
उसे खुशी दे। अपने खुशीयां का दूँकर
उसे हासिल कर अपने जिंदगी के
पुस्तक पर चाँद चार चाँद लगा देना
चाहिए।

जिंदगी एक पेड़ की तरह है कभी बड़े
हमें अच्छे मधुर फल देती है ता कभी
बुरे फल। हम तब जब इन दोनों फलों
को हमारी जीवन की सुंदर ताफा समझ
गले लगाएंगे तब जाकर हम एक
उत्तम व्यक्ति बनेंगे। बुरे वक्त पर बिना
डरे फिर उठकर जब हम लक्ष्य की
ओर बढ़ेंगे तब जा खुशी और समतुष्टी
हमें मिलती है वा स्वर्ग तुल्य है।

• आज की जमाने में पूरे लोग
इस बात को भूल गए हैं की जिंदगी
ता नशा की तरह हमारी आस्वदन
कलिय है। आज लोग भौतिक चीजों
में इतना उलझ गए हैं की अब उन्हें



Item Code:

948

Participant Code:

107

सब जिंदगी जीने की नहीं जिंदगी बिताने की पड़ी है। जीवन के छोट-छोट खुशियाँ को भूल वह बड़े मकान, बड़े गाड़ी, ज्यादा पैसा आदि लालच की आँसु दौड़ जाते हैं। आज किसीके भी पास अपने परिवार के लिए वक्त नहीं है। सब अपने कामकाज पर इतना व्यस्त हैं कि वे अपने दिल के टुकड़ा, अपने पति, बच्चे, माता-पिता से भी नहीं मिलते। बच्चों को समाज की नियमाँ पढ़ाए जाते हैं जो उन्हें शांति से जीना तो क्या सोच लेने भी नहीं देते। उनके चलना बैठना सब दृढ़ नियम पर के अनुसार होना चाहिए जो हमारे जाने बिना ही समाज में स्थापित हैं। इन सब शक टोक से बच्चों के पावन मन जिंदगी को महसूस करने की जुनून घट जाता है। वह आपका भूल, समाज की दृढ़ ~~गुण~~ कल फुलली बन जाती है।

(Note: Graded Items may be published in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)



इसका दृक् दी प्रतिशोध है, -माता पिता
की सम्मानना होगा कि बच्चा की मन इ दृक्
मिदती की तरह है। जिसमें हम अपने इच्छा
के अनुसार बदलकर बना सकते हैं, पर हमारे
दृक् अक्रिया पर वह टूट भी सकते हैं। बच्चा
की अनावश्यक नियम सिखाने के बजाय
हमें उन्हें, जिंदगी की स्वरूपी अमृत की
रस चकने की बढ़ावा देना चाहिए और
अपने इच्छा अनुसार इस ^{अमृत} नशी का उपयोग
करने की बढ़ावा देना चाहिए।

आज के दुनिया में ~~बिंदी~~ की भी.
मानव के जीवन रस का कृती पहुँचानेवाला
दृक् वस्तु है आक्रमण और आजादी की
अभाव। कुछ लोग अपने जीवन नशा
में इतना डूब जाते हैं कि उन्हें अपने
सिवाय कुछ भी नहीं दिखाई देता।
वे अपने पागलपन में आकर दूसरों के
जीवन में विष फैलाते हैं। समाज में
बढ़ती जा रहे अक्रमण, हत्या आदि



इसी का फल है, व ~~अपने~~ दूसरी की पीड़ा
द्वं दुख में खुशी पाकर लोग की शांत
द्वं प्यारी जिंदगी का टुकड़ा - टुकड़ा कर
द्वं है। स्त्रियों के प्रति आत्याचार, धरलु हिंसा,
आदि आज बढ़त ही जा रही है। इन सबका
रकन के लिए हमें हमारे पहले अपने
आपका और फिर अपने अपना का सुधारना
चाहिए। प्रशस्त डोसर मैकिल जाक्सन
न कुछ दर्सा कहा है "अगर आपका
द्वं बेहतर दुनिया चाहिए तो पहले अपने
आपका बदलिए"। हमें भी पहले अपने अंदर
की मूल को धाकर फिर दूसरी का सही
रस्ता दिखाना चाहिए।

मानव के दाय में असीम शक्ति
होती है वह अगर चाहे तो दुनिया को
आबाद कर सकता है या फिर बर्बाद
बरबाद। हमें हमारी अपूर्ण ~~क~~ क्षमता से
दूसरी की हित के लिए कार्य करना
चाहिए, अंधविश्वास, ड्रग, आदि बुरी



आदतां की अंधकार से बचकर जिंदगी की
दंशिन नशा की दिप का रंशन करना
चाहिए।

जिंदगी की खमं निव परिपूर्णता का
प्राप्त करने के लिए हमें दूसरों की सहायता
करना चाहिए। जब हम, हमें मिले बेफिक्र
दरव मुल्यवान जीवन की नशा दूसरों
का बाँटेंगे और उस दूसरों का प्राप्त
करवाने के लिए लड़ेंगे तब हम एक दरसा
विर बन जाता है जो भगवान के तुल्य
है। क्योंकि दूसरों के संरक्षण करने से हम
देवतुल्य बन जाते हैं।

हमारा जीवन हमें मिला एक वरदान
है। इसे दूसरों का खुश करवाने या
दूसरों के खुशी के लिए जिंदगी ता
हम नुरआद गुलाब की तरह ही
जादुगी। पर जब हम ~~दूसरे~~ लोक-
लाभ की चिंता से परे होकर
अपने दिल की तट पर दफन अपनी



को अंगार देकर - दक्क स्वर्णपट्टी की
तरह अपने पर फैलादगा तब हम
अपने जिंदगी में से इतना प्रसन्न होगे
की हम खुद ही अपने असतित्व
पर गर्व करें।

"मानव तो गलती का पुतला,
कोन न गलती करता
गलती बस उससे न होती,
जो काम पर ध्यान न देता।"

इस कविता में कवि ने मनुष्य के
करने के स्वाभाव का वर्णन किया है।
हमें अपने गलतियों से शिक्षा आगे
बढ़ते ही जानना चाहिए।

हमारे इतिहास में हमें कई महाजन
हैं जिन्होंने जिंदगी तो छोटी जी थी,
पर उस छोटी सी उमर में वह
बड़े बड़े कार्य कर - अपने जिंदगी को
दक्क अत्युत्तम अर्थ दी है। उदाहरण



मं राणी लक्ष्मीबाई । उन्होंने अपने
जुनून एवं दूसरा के हित के लिए
कर्म की और उसके लिए जान भी
कुरबान कर दिए, हमें भी अपने
अंदर की नशे का जक जगाकर, उसे
अपने इष्ट-अनुसार जिना चाहिए, क्योंकि
जैसे महात्मा गांधी - ने कहा है कि
"करा या मरा" हमें या तो अपने
जिंदगी जीना चाहिए या फिर अपने
जिंदगी का ठिक ठाक न जीब पान
की गम में मर जाना चाहिए। ता
चल हम सब यह वादा करते हैं की
हम अपने ~~अ~~ खुद जिंदगी का प्रसन्नता
एवं ~~के~~ उलास के साथ जिंदगी जैसे
हम की हम किसी नशे में ही।

धन्यवाद !

* ————— *